रात्रि क्लासः— 25/9/68 :— अभी बाप ने बच्चों का नाम रखा है साहबज़ादे और साहबजादियाँ। सच्चा साहब बाप को ही कहा जाता है। बच्चे भी समझते हैं बाप के सम्मुख आये हुए हैं। नई बात भी नहीं समझते होंगे। बच्चे कहते हैं बाबा हम कल्प2 आप के पास आते हैं। और वरसा लेते हैं। पुरानी दुनिया में तो दुख अपार है। नई दुनिया में सुख अपार है। उनका ही ड्रामा बना हुआ है। जो बाप ने समझाया है। बाप से वरसा लेना है बहुत सहज। सिर्फ पवित्र बनने लिए पुरुषार्थ कर रहे हैं। 84 का चक्र तो समझ गये हैं। हम सभी आत्माएँ हैं। हमारा बाप परमपिता परमात्मा है। बाबा को बुलाया ही है बाबा हमको पावन बनाकर ले चलो। अभी यहाँ मज़ा नहीं है। बहुत घोर—घमसान हो गया है। वहाँ तो हम थोड़े थे। फिर रावण राज्य में कितनी वृद्धि हो गई है। गोया तुम अपनी राजधानी में बहुत खुशी मोज़ में थे। यह बाप ही समझाते हैं। शास्त्रों में तो गपोड़े ही हैं। अभी बच्चे जानते हैं हम बाबा के पास आये हैं। भागीरथ पर बाप आते हैं हमको वरसा देने लिए। पावन बनने का रास्ता भी सहज बताते हैं। हाँ अलबत माया विघ्न डालती है। घड़ी2 कहते हैं बाबा हम याद करना भूल जाते हैं। बाबा कहते हैं तुम तो वन्डरफुल हो। बाप को कब बच्चे भूलते हैं? जो कि इतना बड़ा वरसा देते हैं। यह भी जानते हो बाप संगम पर ही आते हैं। नई दुनिया है पुरुषोत्तम देवी देवताओं की। यह बेहद का सन्यास है। वैराग्य आता है यह पुरानी दुनिया पुराना कपड़ा है। हम नई दुनिया में बड़े सुखी थे। धनवान थे। कल की बात है। लाखों वर्ष की बात नहीं। कल हम भारतवासी स्वर्ग में थे। हमारा राज्य था। अभी

बाबा ने समझाया है तुम रावण राज्य में फँस मरे हो तब पुकारते हो बाबा आओ आकर हमको पावन दुनिया में ले चलो। यह तो बच्चे समझते हैं शरीरों को नहीं ले चलना है। परमपिता परमात्मा बाप पावन बनने की युक्ति बतलाते हैं। हूबहू जैसे कल्प पहले सिखाये थे। वैसे ही कल्प2 सिखलाते हैं। इसको कहा जाता है गुप्त योगबल की सेना। हथियार आदि की बात ही नहीं। बाहूबल से कब विश्व पर राज्य नहीं ले सकते हैं। टीचर से योग लगाने से कमाई होती है। तुम जानते हो हम बाबा के साथ योग लगाते हैं। अथाह कमाई होती है। बाप आकर यह सच्ची कमाई कराते हैं। इसमें झूठ आदि बोलने की दरकार नहीं। बाप कहते हैं तुम्हारा खाता पापों से भर गया था। लाखों करोड़ों जमा था गुप्त। अभी सभी खलास कर खाली हो गये हो। अभी फिर योगबल से जमा करना है। बात तो बड़ी गुप्त है। मुँझना नहीं है। बाबा का रूप क्या है? अरे तुम आत्मा का रूप क्या है। आत्मा तो है ना। जैसे आत्मा है वैसे बाप भी है। तब तुम आत्माएँ बाप को पुकारती हो। आत्माएँ जानती हैं लौकिक से अल्पकाल का सुख मिलता है। पारलौकिक बाप से बेहद का वरसा मिलता है। बाप और वरसा में ही बुद्धि है। इसको कहा जाता है मन्मनाभव। बाप बच्चों को क्या कहेंगे। लौकिक से अल्पकाल का झणभंगुर सुख है। यह है बेहद का बाप। कहते हैं मेरे याद करो तो यह बेहद का वरसा तुम्हारा है। बिल्कुल साधारण बात है। लौकिक बाप भी ऐसे ही कहते हैं। इसमें तो बच्चों को अन्दर में बहुत खुशी होनी चाहिए। गफलत करेंगे तो फिर दर्जा भी कम मिल जावेगा। बाबा कहते हैं अपन को देखो वहाँ चलने लायक अच्छे फूल बने हो। लायक हो। नारद का मिसाल है ना। यहाँ भी आते हैं हम ल0 को वर सकते हैं। बाप कहते है। देखो 5विकार तो नहीं हैं। अगर है तो लक्ष्मी को कैसे वर सकते इन भूतों को भगाओ। इन्होंने ही हैरान किया है। बहुत ही पुराने भूत हैं। भगाने वाला एक ही बाप है। बाप कहते हैं मैं सर्वशक्तिवान पतित—पावन हूँ। मुझे याद करो तो सभी भूत भाग जावेंगे। नहीं तो भूत तंग करते हैं ना। मोह भी बहुत तंग करता है। 5000 वर्ष पहले जिस प्रकार, जैसे 5 विकारों का जीत जगत जीत बने हैं अभी बनते हो। बाप कहते हैं मैं यहाँ आबू में आया हूँ। मुझे ही विश्व की सदगति करनी है। तो यह है सबसे बड़े ते बड़ा तीर्थ। किसको भी पता नहीं है। जैसे बाप रचयिता और उनकी रचना को नहीं जानते हैं वैसे आबू को नहीं जानते है। सभी धर्मों के तीर्थ में आबू श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ है। आबू को बहुत मान देना चाहिए। जमीन पड़ी हुई है वहाँ म्युजियम बन जाये तो बहुत

अच्छा है। जितना पैसा मांगेंगे खरीद कर सकते हैं। नम्बरवन आबू का म्युजियम बना दो। बाप बैठे हैं। बाबा लिखेंगे सब जगह से पहले यह लिखो सर्व शास्त्र मई शिरोमणी गीता है, वैसे ही सब तीर्थों में महान तीर्थ आबू है। वहाँ सर्व की सद्गति करने वाला बाप रहते हैं। स्थापना हो रही है। आदिदेव बैठा है। बच्चे कोठरियों में बैठे हैं। महारथी घोड़ेसवार भी हैं। ऊपर में स्वर्ग की निशानी पुरी एक्युरेट है। तो जमीन का प्रबन्ध करना पड़े। तुम आबू की महिमा करेंगे तो और भी सब बहुत खुश होंगे। बाबा ने नाम बहुत अच्छा रखा है। साहबजादे, साहबज़ादियाँ को देख साहब बहुत खुश होते हैं। ऐसे बाप को भूलो नहीं। बाप तुमको काल पर जीत पहनाते हैं। यहाँ तुम्हारा है ईश्वरीय परिवार। फिर जाना है दैवी परिवार में। हम सो ब्राह्मण, ब्राह्मण सो देवता.....बनेंगे। हम आत्मा सो परमात्मा। परमात्मा सो आत्मा। वह बात नहीं है। तुम हो स्वदर्शनचक्रधारी। बाप तु(म)को बनाते हैं। ब्रह्मा को भी बनाते हैं। तो ब्रह्मा के बच्चों को भी बनाते हैं। हमेशा अन्दर में समझो स्वीटेस्ट बाबा है। जो बच्चों को बहुत ही स्वीट बनाते हैं। बाबा को तो दिल से लगा देवे। दिल में वह खुशी रहनी चाहिए। बेहद का बाप तो कमाल करते हैं। ऐसे बाबा की श्रीमत पर चलनी चाहिए। तब श्रेष्ठ बनेंगे। मनुष्यमत, देवता, ईश्वरीय मत समझाई जाती है। मनुष्य मत से आये हो ईश्वरीय मत में। फिर जावेंगे देवता मत में। अच्छा बच्चों रूहानी बाप व दादा का यादप्यार गुडनाइट और नमस्ते।